SEM-I

समाजशास्त्र

MJC-1

Date:- 03/11/25

विषय:- समाज शास्त्र :- उत्पत्ति और विकास

पश्चिमी समाजों की तुलना में भारत में समाजशास्त्र का विकास अपेक्षाकृत देर से हुआ। भारत में समाजशास्त्र का संस्थागत रूप से आरंभ लगभग 1917 ई० में हुआ, जब कलकत्ता विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र को विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा। भारत में समाजशास्त्र के विकास को तीन प्रमुख चरणों में बांटा गया है:-

अ- औपनिवेशिक संस्थापन युग (The Non Colonial Establisment Era):- काल:- 1917 तक का समय (

इस काल में भारत में समाजशास्त्र के बीज प्राचीन ग्रंथों, वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण महाभारत आदि में निहित थे।
समाज, संस्कृति, धर्म, परिवार, आदि विषयों पर विभिन्न विद्वानों दार्शनिकों और धार्मिक नेताओं (रामकृष्ण, विवेकानंद, अरविन्द घोष) ने अपने विचार दिये।
पश्चिमी शिक्षा और विचारों के प्रभाव से समाज और संस्कृति के अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित हुई।
इस युग में भारतीय समाज पर धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक दृष्टि से अध्ययन तो हुए किंतु यह अभी वैज्ञानिक रूप नहीं ले पाया।

औपचारिक संस्थापन युग (The Formal Establisment Era):-
काल:- 1917 से 1947 तक
1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में पैट्रिक गेडस (Patrick Geddes) के निर्देशन में समाजशास्त्र की पढ़ाई शुरू हुई।
1921 में बंबई विश्वविद्यालय में और 1923 में लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग स्थापित हुआ।
इस काल में समाजशास्त्र की पहचान एक स्वतंत्र विषय के रूप में हुई। प्रमुख समाजशास्त्री - जी० एस० घुर्ये, डॉ० पी० एन प्रभु, डॉ० एम एन श्रीनिवास, डा० ए आर० देसाई, डॉ० के० एम० कपाड़िया, डा० पी० मुकर्जी इत्यादि ने भारतीय समाजशास्त्र को भारत के संदर्भ में विश्लेषित किया।

व्यापक प्रसार युग -(Wide-Expantion-Era):-
काल:- 1947 के बाद (स्वतंत्रता के बाद का काल)
स्वतंत्रता के बाद भारत में समाजशास्त्र का तीव्र विकास हुआ।
देश भर के विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र विभाग स्थापित

Scanned with CamScanner